साक्षात्कार

उर्दू एक बहुत ही मीठी जुबान है : नीना पॉल

सुधाओम ढीगरा द्वारा लिया गया नीना पॉल का साक्षात्कार

नीना पॉल

ब्रिटेन की प्रतिष्ठित रचनाकार नीना पॉल से मैं कभी मिली नहीं थी। गत वर्ष कुछ क्षणों के लिए एक कार्यक्रम में मेरी उनसे मुलाकात हुई। कथा यू.के. का इंदु शर्मा कथा सम्मान दिल्ली में था। उस कार्यक्रम में अमेरिका से मैं भी गई थी। कुछ पलों के लिए वे मुझ से मिली थीं। उनकी तबियत ठीक नहीं थी, अतः उन्हें यू.के.वापिस लौटना पड़ा। उसके बाद कई बार मेरी उनसे फोन पर बात हुई। बीमारी के बावजूद उन्होंने मुझे इंटरव्यू दिया। सौम्य व्यक्तित्व की धनी नीना जी के आत्मीय संवादों ने इंटरव्यू बहुत जल्दी पूरा करवाया। पेश है उनसे हुई बातचीत-सुधा ओम ढींगरा

आपके कई ग़ज़ल संग्रह छपे हैं। इस विधा को आपने कैसे साधा है?

लखनऊ की शायराना मिट्टी में ही कुछ ऐसी सुगंध है जो होश संभालते ही कलम हाथ में थमा देती है। कुछ शायर बन जाते हैं और कुछ अच्छे श्रोता। मुझे बहुत छोटी आयु से ही मुशायरों में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब श्रोतागण दूसरों की शायरी सुन कर वाह-वाह करते तो मन चाहता कि मैं भी कुछ सुनाऊं....लोग मेरी शायरी की भी प्रशंसा करें। ब्रिटेन आ कर यह इच्छा पूरी हो गई।

ग़ज़ल के लिए मीटर के अनुशासन की जरूरत होती है। वह अनुशासन ही ग़ज़लकार को कुशल बनाता है। आप इसके बारे में क्या सोचती हैं?

हर लेखन अनुशासन के नियमों से बंधा होता है। आप इसे मेरी नासमझी भी कह सकती हैं कि शुरू में मैं मीटर के विषय में कुछ नहीं जानती थी। मैंने यह विधा किसी से नहीं सीखी। छोटी आयु में ही अपना देश छूट गया। ब्रिटेन आकर लंदन से 120 मील दूर एक शहर लेस्टर मेरा निवास स्थान बना। यहां के एशियन अधिकतर गुजराती भाषा बोलते हैं। बस लिखने का शौक था तो लिख डाला। मैं जो कुछ भी लिखती, पाठक उसकी प्रशंसा करते रहे। मेरा हौंसला बढ़ता गया। मैं आम लोगों के लिए सरल भाषा में लिखने लगी। इसमें मेरी आवाज विशेषकर मेरी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ने बहुत साथ दिया। रेडियो प्रेजेंटर की नौकरी भी बहुत सहायक सिद्ध हुई। पहले मेरी शायरी केवल श्रोताओं तक सीमित थी। श्रोताओं के सुझाव पर ग़ज़ल संग्रह छपे। जिसे पाठकों ने बहुत पसंद किया और इनकी चर्चा होने लगी।

मेरी ग़ज़लों को आजाद शायरी का नाम दिया गया। एक बहुत बड़े कवि और शायर दुष्यंत कुमार ने भी अपनी पुस्तक में आजाद शायरी का वर्णन किया है। मैं ग़ज़लें तरन्नुम में पढ़ती हूं, जिसमें लफ्जों के आगे पीछे होने की गुंजाइश कम होती है। मेरे ग़ज़ल संग्रह छपते गए और श्रोता और पाठक बढ़ते गए। यह पाठकों का प्यार ही तो है, जो वह मुझे तरह- तरह के ख़िताबों से नवाजने लगे। एक ग़ज़लकार को इससे ज्यादा और क्या चाहिए कि उसकी ग़ज़लों को गायक अपना स्वर दें।

अच्छा यह बताएं कि उर्दू ग़ज़ल को आप हिन्दी ग़ज़ल से

कितना भिन्न पाती हैं?

उर्दू एक बहुत ही मीठी जुबान है। उर्दू ग़ज़लों को समझने के लिए उर्दू भाषा का किसी हद तक ज्ञान होना अनिवार्य है। दोनों में ही मीटर और बहर का ध्यान रखा जाता है। हिन्दी ग़ज़ल में अधिकतर हिन्दी के साथ-साथ उर्दू के सरल शब्द प्रयोग किए जाते हैं। उर्दू और हिन्दी ग़ज़ल में जहां तक कि मैं समझती हूं शब्दों के उच्चारण में अंतर है। लोग ग़ज़ल पढ़ते या सुनाते समय बिंदु की ओर विशेष ध्यान नहीं देते जैसे ज़ को ज पढ़ना या फ़ के स्थान पर फ का प्रयोग करना आदि....यह हिन्दी ग़ज़ल में किसी हद तक चल जाता है किंतु उर्दु ग़ज़ल में इसे मान्यता नहीं मिलती। वैसे अपने क्षेत्र में दोनों का अपना-अपना स्थान है।

आपकी ग़ज़लों का मूल स्वर क्या है तथा उसमें आपने किन जीवन मूल्यों को अधिक महत्त्व दिया है?

मेरी ग़ज़लों का मूल स्वर शृंगार रस है। रचना कोई भी हो वह अपने अंदाज में बहुत कुछ कह जाती है। कवि या शायर कभी सोच कर नहीं लिखता कि आज कुछ लिखने का मूड है चलो लिखा जाए। ग़ज़ल या कविता निरंतर चलने वाले मन के ऐसे भाव हैं जो कभी शृंगार रस द्वारा, कभी सौंदर्य रस, कभी वीर रस और कभी भाव रस द्वारा व्यक्त होते हैं। जैसा कि मैं हमेशा कहती हूं कि मैं वही लिखती हूं, जो मेरे पाठक मुझसे लिखवाते हैं। यह पाठकों का प्यार है जो मेरी कलम शृंगार रस में ओत-प्रोत रहती है। शृंगार रस में अपने प्रियवर से बातें करना, संयोग, वियोग, रूठना, मनाना, सौंदर्य की प्रशंसा करना आदि शामिल रहता है। चंद शब्दों में सारा हाल-ए-दिल बयां हो जाता है। ऐसा ही प्यार हम अपने इष्टदेव से भी करते हैं। रोज भगवान् से एक भगत कितनी बार लड़ता-झगड़ता है, उल्लाहने देता है। फिर स्वयं ही मान भी जाता है। सूरदास की शृंगार रस की कविताएं आज भी मंदिरों में, घरों में कितने प्रेम से गाई जाती हैं। मेरी कोशिश यही रहती है कि ग़ज़लों में कोई न कोई संदेश जरूर हो।

हिन्दी साहित्य में ग़ज़ल का भविष्य क्या है? आपकी राय जानना चाहती हूं, क्योंकि ग़ज़ल हिन्दी साहित्य में अभी अपनी दिशा ढूंढ रही है?

जी सही कहा आपने...हिन्दी साहित्य में ग़ज़ल विधा अभी अपना पैर जमाने का प्रयत्न कर रही है। आजकल गद्य। का जमाना है। हिन्दी जगत में कहानियों और उपन्यासों की मांग है। वैसे एक और चीज भी सामने आ रही है...वह है अतुकांत कविता। आजकल अतुकांत कविता का बहुत चलन है। कविता लिखना काफी हद तक सरल हो गया है। कुछ लोग तो अतुकांत के नाम पर पूरा का पूरा गद्य ही लिख डालते हैं। समझ में नहीं आता कि आप कविता पढ़ रहे हैं या कोई लघु कथा। जब तक कुछ नया नहीं आएगा, ग़ज़लें हिन्दी में नहीं समा पाएंगी। हमारी युवा पीढ़ी ही इस ओर कदम बढ़ा सकती है।

नीना जी, एक प्रश्न मैं ऐसा पूछने जा रही हूं, जो शायद आपको पसंद न आए पर पूछना जरूरी है। आपके ग़ज़ल संग्रह ग़ज़ल समीक्षकों की राय में ग़ज़ल के मीटर पर पूरा नहीं उतरते, जबकि आप अपने इलाके में ग़ज़लों के लिए बहुत लोकप्रिय हैं। क्या कहेंगी आप?

जैसा कि मैं पहले ही अर्ज कर चुकी हूं मेरा लिखना शौकिया शुरू हुआ...पाठकों ने पसंद किया और मैं उनके लिए लिखती चली गई। इस ओर मेरा कभी ध्यान ही नहीं गया। लोगों ने मेरी शायरी को आजाद शायरी का नाम दिया। एक लेखक और शायर को और क्या चाहिए...अपने पाठकों का प्यार। जो मुझे भरपूर मिला और आज भी मिल रहा है। किसी गुट में होती तो उनके समीक्षक मेरी शायरी को उत्तम शायरी का दर्जा दे देते। बहुत से तर्क देकर मेरे लिखे को सार्थक ठहरा देते। आप तो जानती हैं, हम गुटों से परे होकर लिखते हैं।

ग़ज़ल के अतिरिक्त आपने उपन्यास और कहानियां भी लिखी हैं। यह सब लिखते समय आप किस मानसिकता से गुजरती हैं। अपने अनुभवों को हमारे साथ साझा करें।

जी जरूर। अभी तक मेरे पांच ग़ज़ल संग्रह, तीन कहानी संग्रह और तीन उपन्यास आ चुके हैं। ग़ज़ल, कहानी और उपन्यास तीनों एक दूसरे से भिन्न है। ग़ज़ल लिखते समय आप लफ्जों से खेल सकते हैं, वहीं कहानी और उपन्यास गम्भीरता की ओर ले जाते हैं। इसमें पात्रों की भावनाओं का ख्याल रखना होता है। प्रतिदिन हमारे चारों ओर अनगिनत घटनाएं घटती रहती हैं, जिनसे हम अछूते नहीं रह सकते। एक लेखक तो वैसे ही भावुक होता है। उन घटनाओं को देखते हुए उसका हृदय पीड़ित हो उठता है और वह उन सारी संवेदनाओं को शब्दों द्वारा कागज पर उतार देता है। आप अपने पात्रों के साथ संवाद करते हैं. ..उनके साथ सोते-जगते हैं... रोते हैं... हंसते हैं... उनकी भाषा बोलते हैं। वह पात्र लेखक के जीवन का अंग बन जाते हैं। कितने ही समय तक उस कहानी का प्रभाव मस्तिष्क पर ऐसा छाया रहता है कि आप कुछ और सोच ही नहीं सकते। इसमें मेरा रेडियो पर काम करना बहुत सहायक सिद्ध हुआ। लोग मुझे आप बीती घटनाएं

सुना कर आग्रह करते कि मैं इस पर गीतों भरी कहानी लिख कर रेडियो पर सुनाऊं। इस प्रकार मुझे भी एक नई कहानी मिल जाती।

यह प्रश्न तकरीबन मैं हर लेखक से पूछ रही हूं, भिन्न-भिन्न पात्रों का जीवन जीते हुए निजता और समाज का योगदान कितना रहता है?

यदि समाज का योगदान न हो तो शायद शब्द कहानी का रूप न अपना सकें। जैसे-जैसे समाज का रुख़ बदलता है, हमारे विचार भी बदलते जाते हैं। हमारे रोजमर्रा के जीवन में न जाने कितने हादसे घटित होते रहते हैं। उन्हीं में से कुछ कहानियों का रूप ले लेते हैं। हां अपने निजी जीवन का कुछ अंश न चाहते हुए भी कहानियों में आ ही जाता है।

विदेश आपकी सृजनात्मक प्रक्रिया में कितना सहायक सिद्ध हुआ है?

जहां हम रहते हैं, वहां के समाज, लोगों, परिस्थितियों का प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ना स्वाभाविक है। हम भी उस समाज का एक हिस्सा होते हैं। करीब पिछले बयालीस वर्षों से मैं ब्रिटेन में रह रही हूं। यहां के बहुत से उतार-चढ़ाव देखे हैं तो उसका प्रभाव लेखनी पर भी पड़ता है। ब्रिटेन में आकर मैंने बहुत कुछ सीखा है और बहुत कुछ लिखा है। चाहे मैं बचपन से लिखती आ रही हूं, किंतु शायर और लेखक मुझे ब्रिटेन ने ही बनाया है। मेरा प्रयत्न यही रहता है कि अपनी कहानी के लिए कोई न कोई यहां का विषय उठाऊं, जिसे भारत में रहने वाले पाठक बहुत पसंद करते हैं। कहानियों के माध्यम से उन्हें भी ब्रिटेन के विषय में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त होती है।

आपकी उपलब्धियां क्या हैं?

9 वर्ष की आयु में कविता के लिए हिंदी- मिलाप समाचार पत्र व रेडियो द्वारा सम्मानित, उपन्यास रिहाई के लिए हिन्दी सम्मेलन दिल्ली द्वारा सम्मानित, लखनऊ से सुमित्रा कुमारी सिन्हा सम्मान, उपन्यास तलाश के लिए 2011 में कथा यू.के. द्वारा पद्मानंद साहित्य से ब्रिटेन के हाऊस ऑफ कॉमन्स में सम्मानित, 2015 में उपन्यास 'कुछ गांव-गांव कुछ शहर-शहर' के लिए विश्व हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा श्रेष्ठ कृति सम्मान।

नया क्या लिख रही हैं?

एक कहानी संग्रह छप कर आया है। यदि समय ने साथ दिया तो शीघ्र ही अगला उपन्यास आरम्भ हो जाएगा।

•••

लघुकथा

अन्तरात्मा

मधुदीप

यूँ किस्सा बहुत बड़ा नहीं है लेकिन बात बहुत बड़ी थी और पिछले एक सप्ताह से मधुप पाण्डेय के लिए परेशानी का सबब बनी हुई थी। एक वर्ष के अथक परिश्रम के बाद उसने एक सॉटवेयर डवलैप किया था जिसे उसने 'अन्तरात्मा' नाम दिया था। उसके अनुसार यह सॉटवेयर कम्प्यूटर में इन्स्टॉल करते ही सीधा मनुष्य के विवेक से कनेक्ट हो जाता था।

वह इस सॉटवेयर के परिणामों की जाँच करने के लिए उचित अवसर की तलाश में था और शीघ्र ही यह अवसर उसे मिल भी गया। वर्तमान शासन की नीतियों से क्षुब्ध होकर अपनी-अपनी अन्तरात्मा की पुकार पर कुछ लेखक-कलाकार अपने-अपने वे इनाम-इकराम लौटा रहे थे जिनसे पुराने शासन ने उन्हें नवाजा था।

इन सभी हालात को विश्लेषित करते हुए उसने अपने लैपटॉप पर एक विस्तृत लेख लिखा और उसे इन्स्टॉल किये गए सोटवेयर के साथ कनेक्ट कर दिया।

पिछले एक सप्ताह से सुबह उठते ही वह सबसे पहले लैपटॉप को ऑन करके सॉटवेयर के उत्तर की जाँच करता रहा है। वह हैरान और परेशान था कि उसका लैपटॉप कोई रिस्पोंड नहीं कर रहा था। न ही लेख के सही होने के परिणामस्वरूप टाइप किये गए अक्षर बोल्ड हुए थे और न ही अक्षर गड्डमड्ड हुए थे जिससे कि उस लेख को असत्य ठहराया जा सके।

पिछले सात दिनों से उसकी परेशानी, उत्तेजना और खीज लगातार बढ़ती जा रही थी। वह अपनी असफलता को स्वीकार करने के लिए कतई तैयार नहीं था।

आज सुबह आशा-निराशा के बीच झूलते हुए जब उसने लैपटॉप ऑन किया तो वह खुशी से उछल पड़ा। उसके लिखे लेख के सारे अक्षर गड्डमड्ड हो गए थे।

"इस विकट स्थिति को विश्लेषित करने के लिए अन्तरात्मा को इतना समय तो चाहिए ही था!" अपनी सफलता पर ठहाका लगाकर हँसते हुए वह सोच रहा था।